International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.95-99

लखनऊ क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं में निर्देशन कार्य की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन

ज्योति गुप्ता*

प्रस्तावना

आज का युग वैज्ञानिक, प्राविधिक और औद्योगिक होने के कारण इसके वैश्विक परिदृश्य तथा तकनीकी ज्ञान में दिन–प्रतिदिन तेजी से परिवर्तन हो रहा है। ज्ञान का विस्फोट होने के कारण जहाँ एक ओर शैक्षिक एवं व्यावसायिक विविधता बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर छात्र पाठयक्रम के अतिरिक्त भार, गला–काट प्रतिस्पर्धा, सहपाठियों के साथ सामन्जस्य न होना तथा आशानुरूप सफलता प्राप्त न होने से उत्पन्न कुण्ठा, कुसमायोजन, तनाव व अवसाद जैसी समस्याओं से ग्रसित हो रहे हैं उनमें अपनी कार्यकुशलता व व्यवसायों को लेकर अनिश्चितता की स्थिति व्याप्त है, जिससे वे अपने भविष्य निर्धारण में सक्षम नहीं है। वास्तव में देखा जाए तो इनमें प्रतिभा की कमी नहीं है, बस आवश्यकता है उनमें एक नए जोश व उमंग की, एक नयी प्रेरणा व दिशा की, जो उचित निर्देशन द्वारा ही संभव है। ऐसी अनेक विभूतियाँ हैं जो अवसर न मिलने के कारण अपने ज्ञान–प्रकाश से हमारा मार्ग–प्रदर्शन न कर सकीं तथा हमेशा के लिए लुप्त हो गयीं।

व्यक्ति तथा समाज की आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य निश्चित होते हैं। जैसे–जैसे समाज जटिल होता गया विचारधारा में परिवर्तन हुए, साथ ही शिक्षा के प्रशासनिक एवं संरचनात्मक ढांचे में भी परिवर्तन हुए। हमारे देश में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर काफी उन्नति हुई है। पाठ्य–विषयों के चुनाव, अग्रिम शिक्षा का निश्चय, अपव्यय व अवरोधन जैसी समस्याओं का निदान, नवीन विद्यालयों में समायोजन आदि शैक्षिक व्यवस्थाओं पर शैक्षिक निर्देशन के माध्यम से समाधान का प्रयास किया जा रहा है।

प्राथमिक स्तर की अपेक्षा माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का कार्य अधिक महत्वपूर्ण होता है इसलिए इस स्तर पर विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। आयोग के अनुसार माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर निर्देशन का एक महत्वपूर्ण कार्य किशोर छात्रों की योग्यताओं एवंरुचियों को पहचानना, उनका विकास करना एवं उनकी समस्याओं के निदान में सहायता देना है। इससे छात्रों को अपनी शक्तियों एवं सीमाओं को समझने एवं अपनी योग्यतानुरूप शैक्षिक कार्य करने में सहायता मिलेगी।

वास्तव में, माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम की नितान्त आवश्यकता है। जानकारी के अभाव के कारण इन विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम के महत्व की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है, वहीं विद्यार्थी भी इसके महत्व को समझ नहीं पा रहें हैं। अधिकतर विद्यालयों में निर्देशन की व्यवस्था विधिवत् नहीं पायी गई है और जिन विद्यालयों में है भी, वहाँ मात्र औपचारिकता ही पूरी की जा रही है। इसका मुख्य कारण विद्यालयों में छात्रों की अधिक संख्या, शिक्षकों की न्यूनतम संख्या व शिक्षकों में निर्देशन सम्बन्धी प्रशिक्षण का अभाव है। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी ही सबसे अधिक अधीर अवस्था में पाए जाते हैं।

इन सभी पहलुओं को देखते हुए आज आवश्यकता इस बात की है कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षा देने वाले शिक्षकों को शैक्षिक निर्देशन की पूर्ण जानकारी हो और आवश्यकतानुसार निर्देशन सेवाओं के द्वारा शिक्षक छात्रों के भविष्य निर्माण करने में योगदान दे सकें।

[6] प्राथमिक विद्यालय पिम्मा निवादा, रसूलाबाद, कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश।

प्रस्तुत अध्ययन अनेक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होगा क्योंकि इसका लाभ न केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों को होगा बल्कि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अभिभावकों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों व शोधकर्ताओं के साथ–साथ समाज को भी होगा। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ज्ञात हो सकेगा कि माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक निर्देशन की स्थिति क्या है, शिक्षक निर्देशन कार्य करने में कितने सक्षम हैं व छात्रों को निर्देशन की क्यों और कितनी आवश्यकता है। अतः इस दृष्टिकोण से यह अध्ययन समस्या शोधकार्य के लिए उपयुक्त पायी गई है।

leL;k dFku

''लखनऊ क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं में निर्देशन कार्य की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन।''

'kk/ki= d mnn';

- ग्रामीण संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।
- शहरी संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोधपत्र की परिकल्पना

- ग्रामीण संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं में निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं में निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियोंमें निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ifjlhekdu

- प्रस्तुत अध्ययन में केवल लखनऊ जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की शिक्षा संस्थाओं को लिया गया है, जिसमें नगर–निगम क्षेत्र से बाहर आने वाली संस्थाओं को ग्रामीण व नगर–निगम क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली संस्थाओं को शहरी माना गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में 10 ग्रामीण संस्थाओंसे200 विद्यार्थी एवं 10 शहरी संस्थाओं से 200 विद्यार्थी प्रतिदर्श के रूप में शामिल किए गये हैं।

'kk/k&fof/k

शोधकर्त्री ने अपने शोधकार्य की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अध्ययन की सर्वेक्षण विधि को सर्वाधिक उपयुक्त पाया।

'kk/k&{k=

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र सम्पूर्ण लखनऊ जनपद में अवस्थित उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित समस्त माध्यमिक विद्यालय हैं। जिसमें नगर निगम क्षेत्र के बाहर आने वाले समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्रामीण संस्थायें व नगर निगम क्षेत्र के अर्न्तगत आने वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शहरी संस्थायें हैं।

ifrn'k dk p;u

सरलता एवं वस्तुनिष्ठता का गुण होने के कारण शोधकर्त्री ने सम्भाव्य प्रतिदर्श की यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का चयन किया है। इस निमित्त यादृच्छिक विधि द्वारा समष्टि के 10 ग्रामीण व 10 शहरी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया।

i;Dr pj

- LorU= pj
  - क्षेत्रीय अवस्थिति (ग्रामीण व शहरी)
  - लिंग भेद (छात्र एवं छात्रा)

- vkfJr pj
  - निर्देशन कार्य की आवश्यकता

i;qDr 'kks/k midj.k

शोधकर्त्री ने विभिन्न साधनों का अवलोकन करने के बाद विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता ज्ञात करने के लिए डॉ0 जे0एस0 ग्रेवाल द्वारा विकसित ''गाइडेन्स नीड इन्वेन्ट्री'', का प्रयोग किया गया है।

- fo'oluh;rk% इस परीक्षण की विश्वसनीयता ''परीक्षण पुनः परीक्षण विधि'' द्वारा ज्ञात की गई है, जो 0.82 है।
- o/krk% इस परीक्षण की वैधता विषयगत विधि द्वारा ज्ञात की गई है।

lkf[;dh; fof/k

शोधकर्त्री ने अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मध्यमान, प्रसरण विश्लेषण (Analysis of varriance) या 'ANOVA' का प्रयोग किया है।

inRrk dk fo'ys"k.k ,oa 0;k[;k

miifjdYiuk 1. *''ग्रामीण क्षेत्र की संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं की निर्देशन आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''*

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तों पर F – परीक्षण के प्रयोग से प्राप्त परिणामों का सारांश सारणी–1 में प्रस्तुत है–

lkj.kh 1

Anova: Single Factor

Summary				
Groups	**Count**	**Sum**	**Average**	**Variance**
Column 1	123	20591	167.4065	1131.801
Column 2	77	13717	178.1429	657.6504

ANOVA						
Source of Variation	**SS**	**df**	**MS**	**F**	**P-value**	**F crit**
Between Groups	5458.5766	1	5458.577	5.747059	0.017445634	3.8888(F.05)
Within Groups	188061.1	198	949.8036	.05 स्तर पर सार्थक		
Total	193519.68	199				6.76 (F.01)
निष्कर्ष :–H_0: = $\mu_1 - \mu_2 = 0$ .01 स्तर पर स्वीकृत व .05 पर अस्वीकृत						
H_1: = $\mu_1 - \mu_2 \neq 0$ .01 स्तर पर अस्वीकृत व .05 स्तर पर स्वीकृत						

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थक अन्तर हेतु प्रसरण–विलेषण (F) का परिकलित मान 5.7470 है, जो F- मान के सारणी मानों F.05 से अधिक व $F._{01}$से कम है इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र की संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं की निर्देशन आवश्यकता में सार्थक अन्तर है।

दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना से ज्ञात होता है कि छात्रों से छात्राओं का मध्यमान अधिक है। अतः छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को निर्देशन की अधिक आवश्यकता है।

miifjdYiuk 2- *''शहरी क्षेत्र की संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं की निर्देशन आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''*

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तों पर F – परीक्षण के प्रयोग से प्राप्त परिणामों का सारांश सारणी–2 में प्रस्तुत है–

lkj.kh 2

Anova: Single Factor Summary				
Groups	**Count**	**Sum**	**Average**	**Variance**
Column 1	102	15673	153.6569	579.59396
Column 2	98	15868	161.9184	896.79739

ANOVA						
Source of Variation	**SS**	**df**	**MS**	**F**	**P-value**	**F crit**
Between Groups	3411.258	1	3411.258	4.6412202	0.032420707	3.8888(F.05)
Within Groups	145528.3	198	734.9916	.05 स्तर पर सार्थक		
Total	148939.6	199				6.76 (F.01)
निष्कर्ष :–H0: = μ1 -μ2=0			.01 स्तर पर स्वीकृत व .05 पर अस्वीकृत			
H1: = μ1 -μ2 ≠ 0			.01 स्तर पर अस्वीकृत व .05 स्तर पर स्वीकृत			

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थक अन्तर हेतु प्रसरण–विलेषण (F) का परिकलित मान 4.6412 है, जो F- मान के सारणी मानों $F_{.05}$ से अधिक व $F_{.01}$से कम है इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र की संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं की निर्देशन आवश्यकता में सार्थक अन्तर है।

प्राप्त मध्यमानों की तुलना से स्पष्ट है कि छात्रों से छात्राओं का मध्यमान अधिक है। अतः छात्राओं को निर्देशन की अधिक आवश्यकता है।

ifjdYiuk 3- *''ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''*

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तों पर F– परीक्षण के प्रयोग से प्राप्त परिणामों का सारांश सारणी–3 में प्रस्तुत है–

lkj.kh 3

Anova: Single Factor Summary				
Groups	**Count**	**Sum**	**Average**	**Variance**
Column 1	200	22026	110.13	2200.194
Column 2	200	22633	113.165	2337.234

ANOVA						
Source of Variation	**SS**	**df**	**MS**	**F**	**P-value**	**F crit**
Between Groups	921.1225	1	921.1225	0.406011	0.524368	3.8649(F.05)
Within Groups	902948.175	398	2268.714	दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं		
Total	903869.2975	399				6.70(F.01)
निष्कर्ष :–H0: = μ1 -μ2 =0			.01 व .05 स्तर पर स्वीकृत			
H1: = μ1 -μ2 ≠ 0			.01 व .05 स्तर पर अस्वीकृत			

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थक अन्तर हेतु प्रसरण–विलेषण (F) का परिकलित मान 0.4060 है, जो F- मान के सारणी मानों $F_{.05}$ व $F_{.01}$ दोनों से ही कम है। अतः यह दोनों ही

स्तरों पर सार्थक नहीं है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

दोनों समूहों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान भी लगभग समान है। अतः दोनों ही समूहों में निर्देशन की समान आवश्यकता है।

शोध निष्कर्ष

- ग्रामीण संस्थाओं के छात्रों की तुलना में छात्राओं को निर्देशन की अधिक आवश्यकता है।
- शहरी संस्थाओं के छात्रों की तुलना में छात्राओं को निर्देशन की अधिक आवश्यकता है।
- ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियोंमें निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ifj.kkeksa dh 0;k[;k

सारणी.–3 के आधार पर पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी संस्थाओं के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों समूहों को निर्देशन की आवश्यकता समान रूप से है। इसके सम्भावित कारण हो सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही संस्थाओं के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, साथ ही उनकी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक व व्यावसायिक आवश्यकताएँ व समस्यायें एक समान विकासात्मक अवस्था से गुजरने के कारण लगभग एक समान होती हैं। अतः उनको निर्देशन की आवश्यकता भी समान रूप से होती है।

'kSf{kd mikns;rk

प्रस्तुत शोध की शैक्षिक उपादेयता न केवल शैक्षिक उन्नयन, शिक्षण सुधार व व्यवहारगत परिवर्तन लाने में है बल्कि इससे बालकों के भविष्य के विकास के लिए नीति निर्माण में भी योगदान प्राप्त होगा। प्रस्तुत शोध से नीति निर्माताओं, समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं, मनोवैज्ञानिकों व शिक्षकों को दिशा निर्देशन प्राप्त होने के साथ ही विद्यार्थियों को भी निर्देशन के महत्व का ज्ञान होगा।

LkUnHkZ xzUFk lwph

- पन्त, डी0 (1992),डेवलपमेन्ट ऑफ सेल्फ गाइडेन्स मॉड्यूल फॉर सेकण्डरी एण्ड सीनियर सेकेण्डरी स्कूल्स स्टूडेन्ट्स, इन्डिपेन्डेन्ट स्टडी, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, एन0सी0ई0आर0टी0, न्यू दिल्ली, वॉल–1, पेज–228।
- गोयल, एस0पी0 (2004),गाइडेन्स नीड्स ऑफ एडोलसेन्ट्स, ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ सोशल इकोनॉमिक कंडीशन, इडियन एजूकेशन रिसर्च मैगजीन पार्ट–टू।
- आनन्द, एस0पी0 (2000); ए0बी0सी0एस0 ऑफ गाइडेन्स इन एजूकेशन, ए. पेज सेटर पब्लिकेशन, भुवनेश्वर।
- राव, एन0सी0एस (1956); गाइडेन्स इन सेकेण्डरी स्कूल, वोकेशनल गाइडेन्स ब्यूरो, जबलपुर।
- सिंह, राज(2008); एजूकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेन्स, कॉमनवेल्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- Library philosophy and practice (e-journal)
- www.ericed.gov.
- www. vidyanidhi.org.

❖◆❖